



Anjali israni

20 Apr 2002

08:28 PM

Raipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121185601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 20/04/2002
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 20:28:00 घंटे
इष्ट _____: 36:57:57 घटी
स्थान _____: Raipur
राज्य _____: Chhattisgarh
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:16:00 उत्तर
रेखांश _____: 81:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:03:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:24:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:01:01 घंटे
साम्पातिक काल _____: 10:18:54 घंटे
सूर्योदय _____: 05:40:49 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:23:56 घंटे
दिनमान _____: 12:43:07 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 06:28:00 मेष
लग्न के अंश _____: 04:57:49 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: धृति
करण _____: बव
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: हे-हेमा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृष

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1924	चैत्र	30
पंजाबी	संवत : 2059	वैशाख	8
बंगाली	सन् : 1409	वैशाख	6
तमिल	संवत : 2059	चिथिराई	7
केरल	कोल्लम : 1177	मेदम	7
नेपाली	संवत : 2059	वैशाख	7
चैत्रादि	संवत : 2059	चैत्र	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2059	चैत्र	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति काल _____ : 06:51:56
जन्म तिथि _____ : 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:56:07 घंटे
जन्म योग _____ : पुष्य
सूर्योदय कालीन योग _____ : धृति
योग समाप्ति काल _____ : 24:41:47 घंटे
जन्म योग _____ : धृति
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 06:51:56 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 18:49:45
भभोग _____ : 58:10:19
भोग्य दशा काल _____ : शनि 12 वर्ष 10 मा 26 दि

घात चक्र

मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

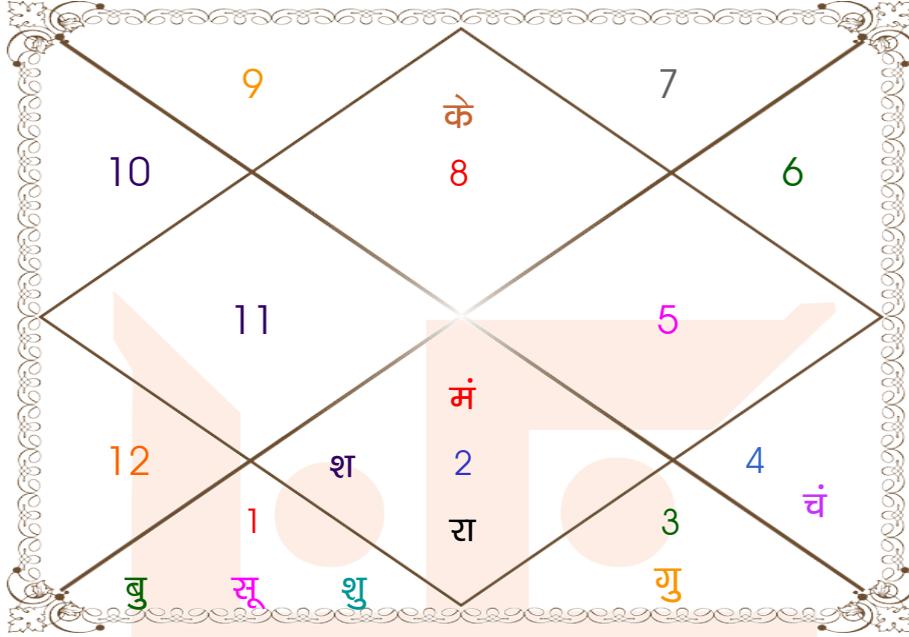
Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

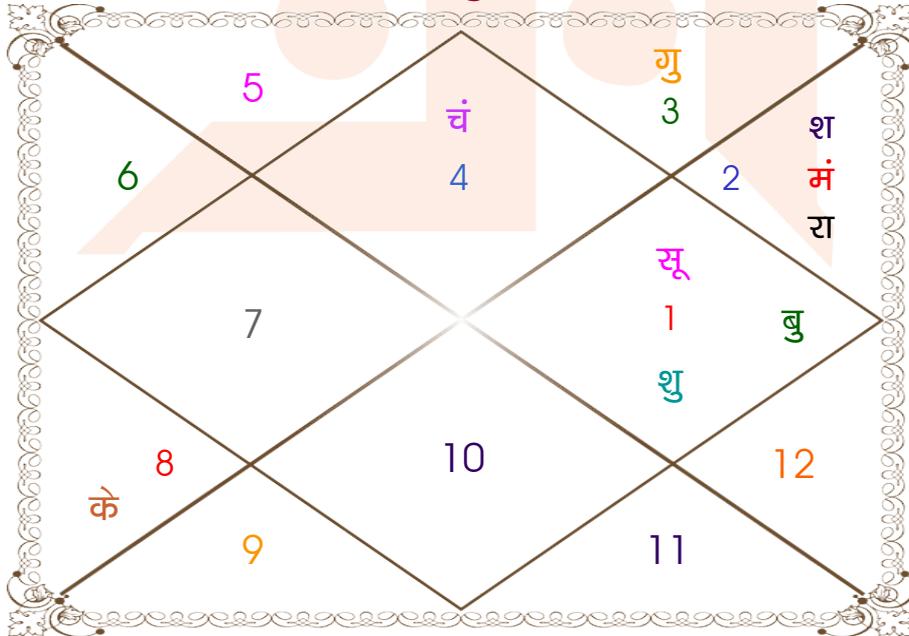
Vibhaasharma.av@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	शु सू बु	रा मं श	गु
			चं
	के ल		

लग्न कुंडली

रा	श मं	शु सू बु	
गु			
	चं		
			ल के

विंशोत्तरी
शनि 12वर्ष 10मा 26दि
शनि

20/04/2002

17/03/2116

शनि	17/03/2015
बुध	16/03/2032
केतु	17/03/2039
शुक्र	17/03/2059
सूर्य	17/03/2065
चन्द्र	17/03/2075
मंगल	17/03/2082
राहु	17/03/2100
गुरु	17/03/2116

योगिनी
धान्या 2वर्ष 0मा 13दि
सिद्धा

04/05/2019

04/05/2026

सिद्धा	13/09/2020
संकटा	04/04/2022
मंगला	14/06/2022
पिंगला	03/11/2022
धान्या	04/06/2023
भामरी	14/03/2024
भद्रिका	04/03/2025
उल्का	04/05/2026

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

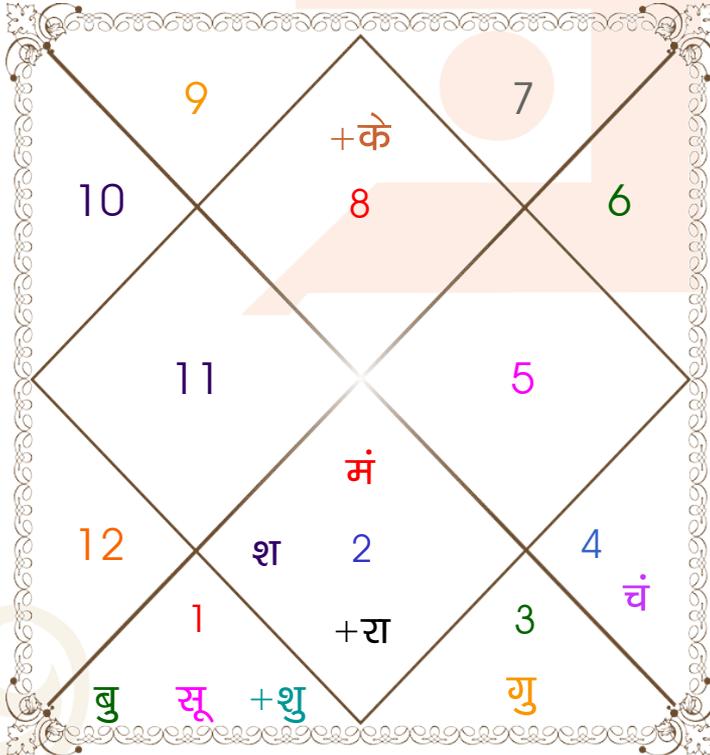
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	04:57:49	318:00:46	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
सूर्य			मेष	06:28:00	00:58:34	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	उच्च राशि
चंद्र			कर्क	07:36:36	13:41:12	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	स्वराशि
मंगल			वृष	10:48:28	00:40:44	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	सम राशि
बुध			मेष	20:36:42	01:53:22	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	सम राशि
गुरु			मिथु	15:29:33	00:08:22	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			मेष	29:51:56	01:13:18	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	राहु	सम राशि
शनि			वृष	18:27:23	00:06:28	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	मित्र राशि
राहु	व		वृष	25:05:34	00:00:05	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	राहु	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	25:05:34	00:00:05	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	04:11:59	00:02:01	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	---
नेप			मक	16:57:14	00:00:45	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	---
प्लूटो	व		वृश्चि	23:29:20	00:00:57	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	मंगल	---
दशम भाव			सिंह	08:52:50	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	गुरु	--

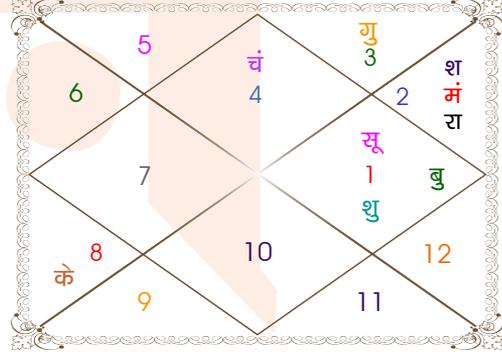
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:53:03

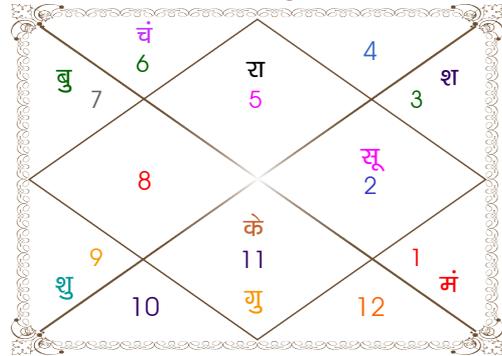
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 20:36:59	वृश्चिक 04:57:49
2	वृश्चिक 20:36:59	धनु 06:16:09
3	धनु 21:55:19	मकर 07:34:30
4	मकर 23:13:40	कुम्भ 08:52:50
5	कुम्भ 23:13:40	मीन 07:34:30
6	मीन 21:55:19	मेष 06:16:09
7	मेष 20:36:59	वृष 04:57:49
8	वृष 20:36:59	मिथुन 06:16:09
9	मिथुन 21:55:19	कर्क 07:34:30
10	कर्क 23:13:40	सिंह 08:52:50
11	सिंह 23:13:40	कन्या 07:34:30
12	कन्या 21:55:19	तुला 06:16:09

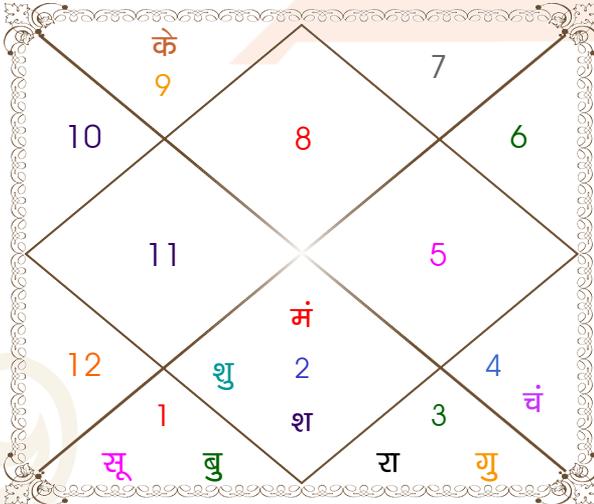
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	04:57:49
2	धनु	04:30:29
3	मकर	05:55:15
4	कुम्भ	08:52:50
5	मीन	10:59:13
6	मेष	09:42:48
7	वृष	04:57:49
8	मिथुन	04:30:29
9	कर्क	05:55:15
10	सिंह	08:52:50
11	कन्या	10:59:13
12	तुला	09:42:48

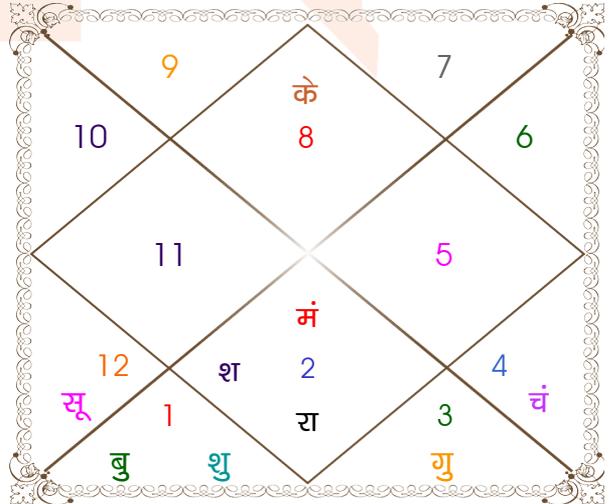
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 12 वर्ष 10 मास 26 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
20/04/2002	17/03/2015	16/03/2032	17/03/2039	17/03/2059
17/03/2015	16/03/2032	17/03/2039	17/03/2059	17/03/2065
00/00/0000	बुध 13/08/2017	केतु 13/08/2032	शुक्र 17/07/2042	सूर्य 05/07/2059
20/04/2002	केतु 10/08/2018	शुक्र 13/10/2033	सूर्य 17/07/2043	चंद्र 03/01/2060
केतु 06/01/2003	शुक्र 10/06/2021	सूर्य 18/02/2034	चंद्र 17/03/2045	मंगल 10/05/2060
शुक्र 08/03/2006	सूर्य 16/04/2022	चंद्र 19/09/2034	मंगल 17/05/2046	राहु 04/04/2061
सूर्य 18/02/2007	चंद्र 16/09/2023	मंगल 15/02/2035	राहु 17/05/2049	गुरु 21/01/2062
चंद्र 18/09/2008	मंगल 12/09/2024	राहु 04/03/2036	गुरु 16/01/2052	शनि 03/01/2063
मंगल 28/10/2009	राहु 01/04/2027	गुरु 08/02/2037	शनि 17/03/2055	बुध 10/11/2063
राहु 03/09/2012	गुरु 07/07/2029	शनि 20/03/2038	बुध 15/01/2058	केतु 16/03/2064
गुरु 17/03/2015	शनि 16/03/2032	बुध 17/03/2039	केतु 17/03/2059	शुक्र 17/03/2065

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
17/03/2065	17/03/2075	17/03/2082	17/03/2100	17/03/2116
17/03/2075	17/03/2082	17/03/2100	17/03/2116	00/00/0000
चंद्र 15/01/2066	मंगल 13/08/2075	राहु 27/11/2084	गुरु 06/05/2102	शनि 21/03/2119
मंगल 16/08/2066	राहु 31/08/2076	गुरु 23/04/2087	शनि 16/11/2104	बुध 28/11/2121
राहु 15/02/2068	गुरु 07/08/2077	शनि 27/02/2090	बुध 22/02/2107	केतु 21/04/2122
गुरु 16/06/2069	शनि 16/09/2078	बुध 15/09/2092	केतु 29/01/2108	00/00/0000
शनि 15/01/2071	बुध 13/09/2079	केतु 04/10/2093	शुक्र 29/09/2110	00/00/0000
बुध 16/06/2072	केतु 09/02/2080	शुक्र 03/10/2096	सूर्य 18/07/2111	00/00/0000
केतु 15/01/2073	शुक्र 10/04/2081	सूर्य 28/08/2097	चंद्र 16/11/2112	00/00/0000
शुक्र 16/09/2074	सूर्य 16/08/2081	चंद्र 27/02/2099	मंगल 23/10/2113	00/00/0000
सूर्य 17/03/2075	चंद्र 17/03/2082	मंगल 17/03/2100	राहु 17/03/2116	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 12 वर्ष 10 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु 12/09/2024 01/04/2027	बुध - गुरु 01/04/2027 07/07/2029	बुध - शनि 07/07/2029 16/03/2032	केतु - केतु 16/03/2032 13/08/2032	केतु - शुक्र 13/08/2032 13/10/2033
राहु 30/01/2025 गुरु 03/06/2025 शनि 28/10/2025 बुध 09/03/2026 केतु 03/05/2026 शुक्र 05/10/2026 सूर्य 20/11/2026 चंद्र 06/02/2027 मंगल 01/04/2027	गुरु 21/07/2027 शनि 29/11/2027 बुध 25/03/2028 केतु 12/05/2028 शुक्र 27/09/2028 सूर्य 08/11/2028 चंद्र 16/01/2029 मंगल 05/03/2029 राहु 07/07/2029	शनि 10/12/2029 बुध 28/04/2030 केतु 25/06/2030 शुक्र 05/12/2030 सूर्य 24/01/2031 चंद्र 16/04/2031 मंगल 12/06/2031 राहु 06/11/2031 गुरु 16/03/2032	केतु 25/03/2032 शुक्र 19/04/2032 सूर्य 26/04/2032 चंद्र 09/05/2032 मंगल 18/05/2032 राहु 09/06/2032 गुरु 29/06/2032 शनि 22/07/2032 बुध 13/08/2032	शुक्र 23/10/2032 सूर्य 13/11/2032 चंद्र 18/12/2032 मंगल 12/01/2033 राहु 17/03/2033 गुरु 13/05/2033 शनि 19/07/2033 बुध 18/09/2033 केतु 13/10/2033
केतु - सूर्य 13/10/2033 18/02/2034	केतु - चंद्र 18/02/2034 19/09/2034	केतु - मंगल 19/09/2034 15/02/2035	केतु - राहु 15/02/2035 04/03/2036	केतु - गुरु 04/03/2036 08/02/2037
सूर्य 19/10/2033 चंद्र 30/10/2033 मंगल 06/11/2033 राहु 25/11/2033 गुरु 12/12/2033 शनि 02/01/2034 बुध 20/01/2034 केतु 27/01/2034 शुक्र 18/02/2034	चंद्र 07/03/2034 मंगल 20/03/2034 राहु 21/04/2034 गुरु 19/05/2034 शनि 22/06/2034 बुध 22/07/2034 केतु 03/08/2034 शुक्र 08/09/2034 सूर्य 19/09/2034	मंगल 27/09/2034 राहु 20/10/2034 गुरु 09/11/2034 शनि 02/12/2034 बुध 23/12/2034 केतु 01/01/2035 शुक्र 26/01/2035 सूर्य 02/02/2035 चंद्र 15/02/2035	राहु 13/04/2035 गुरु 03/06/2035 शनि 03/08/2035 बुध 26/09/2035 केतु 19/10/2035 शुक्र 22/12/2035 सूर्य 10/01/2036 चंद्र 11/02/2036 मंगल 04/03/2036	गुरु 19/04/2036 शनि 12/06/2036 बुध 30/07/2036 केतु 19/08/2036 शुक्र 15/10/2036 सूर्य 01/11/2036 चंद्र 29/11/2036 मंगल 19/12/2036 राहु 08/02/2037
केतु - शनि 08/02/2037 20/03/2038	केतु - बुध 20/03/2038 17/03/2039	शुक्र - शुक्र 17/03/2039 17/07/2042	शुक्र - सूर्य 17/07/2042 17/07/2043	शुक्र - चंद्र 17/07/2043 17/03/2045
शनि 13/04/2037 बुध 10/06/2037 केतु 03/07/2037 शुक्र 09/09/2037 सूर्य 29/09/2037 चंद्र 02/11/2037 मंगल 25/11/2037 राहु 25/01/2038 गुरु 20/03/2038	बुध 10/05/2038 केतु 31/05/2038 शुक्र 31/07/2038 सूर्य 18/08/2038 चंद्र 17/09/2038 मंगल 08/10/2038 राहु 02/12/2038 गुरु 19/01/2039 शनि 17/03/2039	शुक्र 06/10/2039 सूर्य 06/12/2039 चंद्र 16/03/2040 मंगल 26/05/2040 राहु 25/11/2040 गुरु 06/05/2041 शनि 15/11/2041 बुध 07/05/2042 केतु 17/07/2042	सूर्य 04/08/2042 चंद्र 03/09/2042 मंगल 25/09/2042 राहु 18/11/2042 गुरु 06/01/2043 शनि 05/03/2043 बुध 26/04/2043 केतु 17/05/2043 शुक्र 17/07/2043	चंद्र 06/09/2043 मंगल 11/10/2043 राहु 10/01/2044 गुरु 01/04/2044 शनि 06/07/2044 बुध 30/09/2044 केतु 05/11/2044 शुक्र 14/02/2045 सूर्य 17/03/2045

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 7, 8, 1
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

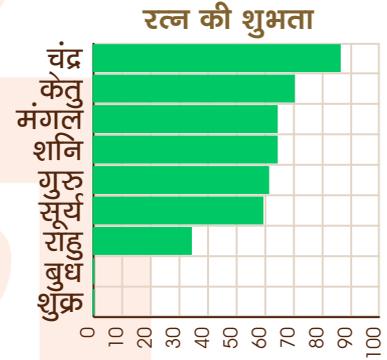
Vibhaasharma.av@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	86%	भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	70%	स्वास्थ्य, दम्पति
मूंगा	मंगल	64%	दम्पति, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	64%	दम्पति, पराक्रम, सुख
पुखराज	गुरु	61%	दुर्घटना से बचाव, धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	59%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	34%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
पन्ना	बुध	0%	शत्रु व रोग, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	17/03/2015	44%	73%	52%	0%	61%	0%	77%	47%	58%
बुध	16/03/2032	66%	73%	64%	6%	61%	0%	64%	34%	70%
केतु	17/03/2039	44%	73%	70%	0%	61%	0%	52%	9%	83%
शुक्र	17/03/2059	44%	73%	64%	0%	61%	0%	70%	47%	77%
सूर्य	17/03/2065	72%	92%	70%	0%	67%	0%	52%	9%	58%
चंद्र	17/03/2075	66%	98%	64%	0%	61%	0%	64%	9%	58%
मंगल	17/03/2082	66%	92%	77%	0%	67%	0%	64%	9%	77%
राहु	17/03/2100	44%	73%	52%	0%	61%	0%	70%	55%	58%
गुरु	17/03/2116	66%	92%	70%	0%	73%	0%	64%	34%	70%

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
सम
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

दुर्घटना से बचाव
बदनामी
व्यावसायिक परेशानी
कम खर्च
सुख

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष समाप्त हो जाता है अतः ऐसा मंगल आपको अधिकांशतया शुभ फल ही प्रदान करेगा। फलतः आपका एवं आपके पति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। पति के स्वभाव में उग्रता का समावेश हो सकता है। लेकिन इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुखोपभोग के साधनों को अर्जित करेंगी एवं धन धान्य से युक्त रह कर सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

यद्यपि आपके लिए यह मंगल शुभ फल दायक रहेगा परन्तु आपके विवाह में इसके कारण विलम्ब हो सकता है लेकिन विवाह अत्यन्त ही शान्ति पूर्ण ढंग से सम्पन्न होगा। आपको किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के उपरान्त आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही पति के स्वभाव में यदा कदा क्रोधाधिक्य की प्रवृत्ति उत्पन्न होगी जिससे अल्प समय के लिए आपस में तनाव तथा कटुता के संबंध उत्पन्न होंगे। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल स्थित होने से आप पति के रूप में किसी योग्य पुरुष को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अपने दाम्पत्य जीवन को प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप अपने कार्य क्षेत्र में प्रायः सफलता एवं उन्नति प्राप्त करेंगी तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगी। लग्न पर दृष्टि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा क्रोध के भाव की प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। साथ ही द्वितीय भाव पर दृष्टि होने से आपका परिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प समय के लिए परिवारिक वातावरण में तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

इसके अतिरिक्त विद्या अध्ययन में आप हमेशा सफल रहेंगी एवं इस विषय में आप को किसी भी प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप शान्ति एवं सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक पुरुष या ऐसे मंगली पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसका मंगली दोष उचित नियम के अनुसार भंग हो रहा हो। ऐसे उचित पुरुष से दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करके आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगी तथा आनन्द पूर्वक समस्त आवश्यक सुखों का उपभोग करेंगी। एक भाग्यशाली महिला के रूप में सुखैश्वर्य से सम्पन्न तथा धनधान्य से युक्त रहकर प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली में मिलान के समय यदि पुरुष की कुण्डली में सप्तम भाव में ही मंगल स्थित हो तो उसकी यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भाव में मांगलिक होने से आप लोगों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा। अतः दाम्पत्य सुख के उपभोग में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होंगे। साथ ही अन्य भावों में मंगल स्थित यदि दोष मुक्त हो रहा हो तो दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। इस प्रकार यदि आप सावधानी पूर्वक मिलान करके वर का चुनाव करेंगी तो सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभातृवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरे से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगी।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध
(17/03/2015 - 16/03/2032)**

बुध की महादशा 17/03/2015 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 16/03/2032 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध छठे भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। प्रथम तथा द्वितीय भाव स्वामी शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, कार्यों में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य तथा सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विरोधियों पर विजय तथा नौकरी में लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, अशावादी और स्फूर्तिवान होंगे। फिर भी मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, त्वचारोग, स्नायविक समस्या तथा उदर रोग आदि मामूली बीमारियाँ हो सकती हैं। उचित उपाय के द्वारा इनमें से बहुतों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी किन्तु कभी-कभी बाधाएं भी आ सकती हैं। किन्तु, आप इन्हें दूर कर लेंगे और आपका उपार्जन उत्तम होगा। कुछ व्यय भी हो सकता है। आपकी नौकरी से अच्छा उपार्जन होगा। सट्टे से उत्तम लाभ होगा। कुल मिलाकर आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग और मस्तिष्क से सम्बन्धित सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तु का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों की कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी, उन्हें सफलता मिलेगी और पदोन्नति तथा आय में वृद्धि होगी। अधीनस्थ कर्मचारी सहायता करेंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को भी आय तथा लाभ होगा, व्यवसाय में विस्तार होगा, विदेश से लाभ होगा तथा कार्य में वृद्धि होगी। अर्थ-व्यवसाय में उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा जमीन-जायदाद :

इस दशा में आपको आराम मिलेगा। आपको सम्पत्ति तथा वाहन-सुख की प्राप्ति होगी। आप जमीन-जायदाद की खरीद बिक्री करेंगे। कोई कानूनी विवाद यदि हो भी तो आपको सफलता मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी। विदेश यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा लाभदायक होगी। आप बहुत अच्छा करेंगे तथा परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षा तथा शैक्षिक सेवाओं में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभावान,

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

कूटनीतिक और बहुमुखी होंगे तथा विभिन्न विषयों में आपकी रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपको अपने बच्चों से सुख तथा लाभ मिलेगा। आपके जीवन साथी का अच्छे कार्यों में व्यय होगा, उन्हें जीविकोपार्जन के अवसर प्राप्त होंगे और विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति, यश और ख्याति मिलेगी तथा उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, माता के साथ उनका सम्बन्ध मधुर होगा और उनके अनेक मित्र होंगे जबकि बड़े भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, उनके कार्यों में परिवर्तन और अचानक लाभ होगा। उनके साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको ननिहाल से लाभ, सफलता, उत्तम सम्मान तथा शासन से लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के दौरान कार्य-क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल रहेगी, आपकी पदोन्नति होगी और लाभ मिलेगा। केतु कठिनाई उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपको सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन हो सकता है। चन्द्र दशा में आपका विवाह और साझेदारों से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान जमीन-जायदाद, सम्पत्ति तथा लाभ मिल सकता है। इसके बाद राहु की दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा हो सकती है और रिश्तेदारों से सहायता मिल सकती है जबकि शनि की अन्तर्दशा में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

**अंतर्दशा :- बुध - राहु
(12/09/2024 - 01/04/2027)**

आपके लिए बुध की महादशा 17/03/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/09/2024 को प्रारंभ होकर 01/04/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। लाभ में वृद्धि होगी। इच्छाशक्ति उत्तम होगी, स्वतंत्र निर्णय लेंगे। समाज में सफलता मिलेगी। व्यापार में अचानक लाभ हो सकता है। स्पर्धियों पर विजय होगी। विवाह हो सकता है। व्यापार संबंधी यात्रा हो सकती है; विदेश भी जा सकते हैं। उच्चपद प्राप्त होगा। अन्य लोग मदद करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप दूसरों की सहायता करेंगे।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा। आपके पिता को निवेश और सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; घरेलू सुख रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, निवेश में लाभ, यात्रा, शिक्षा में प्रसिद्धि, भौतिक सुखों का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा के लिए समर्पित रहेगी, दृढ़प्रतिज्ञ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, कार्य में लाभ होगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं का लाभ बढ़ेगा, व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, कार्यप्रणाली उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी के बजरंग बाण का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(01/04/2027 - 07/07/2029)**

आपके लिए बुध की महादशा 17/03/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 01/04/2027 को प्रारंभ होकर 07/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपको अचानक धनलाभ हो सकता है। जायदाद प्राप्त हो सकती है। साझेदार के माध्यम से या विरासत से धनलाभ हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनलाभ होगा। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध रहेंगे। मधुर वाणी के कारण प्रशंसा होगी। शिक्षा उत्तम होगी; धन का संचय होगा। माता से संबंध मधुर रहेंगे। अचल संपत्ति, वाहन और भोग-विलास के साधन प्राप्त होंगे। शिक्षा उत्तम होगी। अध्यात्म में रुचि होगी। शुभ कार्यों पर खर्च बढ़ेंगे, यात्रा होगी।

Vibha Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

आपके जीवनसाथी धन का संचय करेंगे। आपके पिता के खर्च बढ़ सकते हैं। माता भाग्यशाली रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम स्वास्थ्य, शत्रुओं पर विजय, रोजगार, कार्यक्षेत्र में सफलता, धन और सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, बहुत से मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति ओर सुख के साधन क्रय कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - शनि
(07/07/2029 - 16/03/2032)**

आपके लिए बुध की महादशा 17/03/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 07/07/2029 को प्रारंभ होकर 16/03/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। महत्वाकांक्षाएं तीव्र होंगी। व्यापार में आय अच्छी होगी। नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं। विदेश यात्रा संभव है। विवाह या साझेदारी के कारण जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। संघर्ष के बाद प्रोन्नति हो सकती है। ज्ञानार्जन, धनलाभ और उच्चपद की संभावना है। सम्मान में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी; समृद्ध बनेंगे। दर्शनशास्त्र और अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की प्रोन्नति होगी। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए ज्ञानार्जन, संतान से सुखी, निवेश से लाभ, प्रसिद्धि, धनलाभ, यात्रा, उच्चशिक्षा और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान उत्साह से परिपूर्ण रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धन का लाभ होगा ; शत्रु परास्त होंगे।

अगर आप कार्यरत हैं तो आय बढ़ेगी; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को सफलता मिलेगी, आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः